अतिरिक्त भाग

''मेरे स्मरण के लिए यही किया करो''

(रविवार प्रातः की एक उपासना सेवा)

गीत।

प्रार्थना।

टिप्पणियां:

कई वर्ष पहले, अमेरिका में ''यू आर देयर'' नामक एक प्रसिद्ध टीवी कार्यक्रम होता था, जिसका अनुवाद है ''आप वहीं हैं।'' प्रत्येक सप्ताह उसमें कोई ऐतिहासिक घटना जीवंत रूप में दिखाई जाती, जिससे देखने वाले को लगे कि वह उस अवसर पर वहीं था। प्रभु की मेज़ के पास इकट्ठे होने पर हर रविवार कुछ ऐसा ही होता है। सी. ए. ब्राउन ने इस विचार को इन शब्दों में समझाया है:

> अधिक समय नहीं हुआ, जब मैंने विश्वास के पंखों पर सवार होकर बीच की सदियों को पार करते हुए अतीत में जाकर ''पवित्र देश'' को देखा। मैंने प्रतिज्ञा किए हुए उस देश की हां उसी देश की जिसमें ''दूध और शहद की नदियां बहती थीं'' लम्बाई नापी, दान से लेकर बेर्शेबा तक, मैंने उस देश की खोज की, जहां अब्राहम, इसहाक और याकूब किसी समय रहा करते थे। मैंने मसीह के जन्म पर स्वर्गदूत अति आनन्दित होकर गाते सुना और उस नये जन्मे राजा को आश्चर्य से देखा।
>
> मैं यीशु के साथ चला, जब वह भलाई करता और शैतान के सताए हुए सब लोगों को चंगा कर रहा था। मैंने जीवन के उसके अद्‌भुत वचन सुने और उसे करूणा से भरकर मुर्दों को जिलाते देखा। मैं गलील के तट पर उसके पद चिह्नों के साथ-साथ चला और उसे तत्वों को डांटते और लहरों को शांत करते देखा। मैं उसके साथ निर्धनों और दीन लोगों के घरों में गया और उसे उन्हें राज्य के आने का शुभ समाचार सुनाते देखा।
>
> चांदी के केवल कुछ सिक्कों के लिए यहूदा को अपने प्रभु को पकड़वाते देख मैं क्रोधित और दुखी हुआ। मुझे यह देखकर बड़ा कष्ट हुआ कि वे हमारे प्रभु को पिलातुस के दरबार में ले गए। फिर मैंने उसके विरुद्ध जिसमें कोई पाप नहीं था, झूठे गवाहों को गवाही देते सुना। मैंने सिपाहियों को उस सुन्दर माथे पर कांटों का मुकुट रखते और उस पवित्र चेहरे पर थूकते देखा। मैंने भीड़ को यीशु के लहू के लिए पुकारते सुना और जब वे उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले गए, तो उनके पीछे-पीछे हो लिया। मैंने सिपाहियों को कांपते हुए शरीर में से लकड़ी में कील ठोंकते हुए मोगरों की मद्धम सी आवाज़ सुनी, परन्तु उसके मुंह से, जो क्रूस पर लेटा हुआ था, मुझे कराहने की आवाज़ सुनाई न दी।
>
> मैंने मरियम के व्याकुलता और शोक में डूबे असहाय चेहरे को देखा जैसे ''उसका प्राण तलवार से वार पार छिद गया हो,'' और परमेश्वर के पुत्र को यह कहते सुना, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या करते हैं।'' मैंने अंधकार में सूरज को ग्रहण लगे देखा और प्रकृति की वस्तुओं के भी जो

विद्रोह करने वाली लगती थीं, इस भयावह दृश्य को देखकर, जो नगर की चारदीवारी के बाहर हुआ था, पसीने छूट गए। मैंने कोमल हाथों को उस वृक्ष से बेजान देह को उठाते और बड़े प्रेम से नई कब्र में रखते देखा।

तीसरे दिन की सुबह, मैंने बड़े भय के साथ कब्र में देखा और आनन्द की पुकार सुनी, ''वह यहां नहीं है। अपने वचन के अनुसार वह जी उठा है। आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था।'' चेलों के साथ जैतून पहाड़ पर चढ़कर मैंने यीशु को पिता के पास वापस ऊपर उठाए जाते देखा। मैंने स्वर्गदूतों को यह कहते सुना, ''यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग पर जाते देखा है, उसी रीति से वह फिर आएगा।''

हां, मैं वहीं था। मैंने नये नियम में इतने स्पष्ट ढंग से दिखाए गए उन अद्‌भुत दृश्यों को फिर से जीया। मैं वहीं था-क्योंकि पिछली बार ही, जब मैं प्रभु से उसकी मेज़ पर मिला था जिसकी उसने आज्ञा दी थी कि ''मेरे **स्मरण** के लिए यही किया करो।''[1]

इस विश्वास से कि प्रभु भोज हमारे मसीही अनुभव के लिए आवश्यक है, हम अपनी उपासना सभा को इस यादगारी भोज पर केन्द्रित रखेंगे। बाइबल की बातें एक-दूसरे को बताते हुए, हम उन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करेंगे, जिन्हें कई बार लोग हमारी सहभागिता सेवा के बारे में पूछते हैं।[2]

प्रभु भोज का आरम्भ यीशु द्वारा लगभग दो हज़ार वर्ष पहले किया गया था। अवसर मसीह और उसके प्रेरितों द्वारा उसकी मृत्यु से कुछ घण्टे पहले खाया जाने वाला फसह का भोज था। बाइबल में इसका विवरण मत्ती 26, मरकुस 14, लूका 22 और 1 कुरिन्थियों 11 में मिलता है। 1 कुरिन्थियों की आयतें पढ़े जाने के समय उन्हें भक्तिपूर्वक सुनें।

वचन पाठ: 1 कुरिन्थियों 11: 23-29।

गीत।

टिप्पणियां:

लोग बड़ी जल्दी भूल जाते हैं! इसीलिए हम अपनी स्मरण शक्ति को क्रियाशील रखने के लिए इमारतों और समारोहों जैसे स्मारक बनाते हैं।[3] वाशिंगटन डीसी में दो प्रसिद्ध स्मारक वाशिंगटन मोन्युमैंट और लिंकन मेमोरियल हैं। एक विश्व प्रसिद्ध उदाहरण अपनी पत्नी की कब्र के रूप में भारतीय महाराजा शाहजहां द्वारा बनाया गया ताजमहल है। बाइबल हमें परमेश्वर की भलाई को याद दिलाने के लिए दिए गए बादल में धनुष (उत्पति 9:8-17), याकूब के पत्थर, जो उसे यह याद दिलाने में सहायता के लिए थे कि परमेश्वर उसके साथ था (उत्पत्ति 28:10-22) और फसह का पर्व जो इस्राएलियों को मिस्र से छुटकारे को स्मरण दिलाने के लिए था (निर्गमन 12:14) सहित कई स्मारक बताती है। आज हम प्रियजनों की कब्रों पर पत्थर लगाकर उन पर उनका नाम लिखवाते हैं, ताकि उनका स्मरण रहे। यीशु ने इस बात को समझते हुए कि लोग शीघ्र ही भूल जाएंगे, सब से बड़ा स्मारक

बना दिया, जिसे प्रभु भोज कहा जाता है।

उस स्मारक के लिए, वह अपनी इच्छा से जो चाहता, सामग्री चुन सकता था। संगमरमर, कीमती धातुएं, बेशकीमती जवाहरात–इन सबका इस्तेमाल किया जा सकता था, क्योंकि वह इस योग्य है कि उसका स्मारक संसार का सबसे महंगा स्मारक हो, लेकिन उसने पृथ्वी पर मिलने वाले दो सबसे सामान्य तत्वों का चयन किया।

(1) *रोटी।* ''जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांगकर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, लो, खाओ; यह मेरी देह है'' (मत्ती 26:26)। रोटी शायद संसार में हर जगह पाया जाने वाला भोजन है; संसार का लगभग हर व्यक्ति रोटी खाता है। गेहूं, जिससे मुख्यतया रोटी बनती है, पृथ्वी पर पाया जाने वाला सबसे प्रसिद्ध अनाज है।

यीशु जो रोटी खाता था, वह कैसी लगती थी? अनजाने में लोगों द्वारा प्रभु भोज लेते समय साल्टलाइन क्रैकर्स,[4] फ्रैंच लोवस[5] या खमीरे आटे की रोटी के इस्तेमाल का पता चलता है। परन्तु याद रखें कि यीशु ने प्रभु भोज की स्थापना फसह के पर्व के समय की थी, (मत्ती 26:19)। उस पर्व के दौरान, घर से हर प्रकार का खमीर[6] निकाल दिया जाता था (निर्गमन 12:15); पर्व के दौरान इस्तेमाल की जाने वाली रोटी केवल अखमीरी रोटी ही होती थी (निर्गमन 12:8)। प्रभु भोज की स्थापना में *इसी* रोटी का इस्तेमाल किया गया था। अखमीरी या ताज़ा आटे की रोटी विशेषतया नये नियम में यीशु की देह को दर्शाने के लिए उपयुक्त है, खमीर का इस्तेमाल आमतौर पर पाप के बने रहने वाले प्रभाव को दर्शाने के लिए किया जाता है (देखें 1 कुरिन्थियों 5:8)। खमीर रहित रोटी मसीह की पाप रहित देह का उपयुक्त प्रतीक है (इब्रानियों 4:15)।[7]

(2) *दाख का रस।*

> फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ। ... मैं तुम से कहता हूं कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं (मत्ती 26:27–29)।

उस समय और स्थान में, ''दाख का रस'' दाखरस या दाख के फल को कहा जाता था। यह ध्यान दिया जा सकता है कि प्रभु भोज पर आयतों में अंग्रेज़ी शब्द ''वाइन'' के लिए यूनानी शब्द (*oinos*) का इस्तेमाल नहीं हुआ, बल्कि ''दाख का रस'' हुआ है, जो ऐसा शब्द है, जिसमें दाख का फल शामिल है। अंगूर भी खाने की एक सामान्य वस्तु है; यद्यपि यह गेहूं की तरह विश्वव्यापी नहीं है, परन्तु संसार के अधिकतर भागों में अंगूर पाए जाते हैं।[8] पुनः, ''दाख रस'' सहभागिता सेवा के इस भाग के अनुकूल है। इसे संयोग कहें या न, दाखरस की लाल पुट[9] में हम में से कइयों को यीशु के लहू की झलक मिलती है।

यीशु ने इस सरल स्मारक की स्थापना दो साधारण सी वस्तुओं अखमीरी रोटी और दाख के रस से की। दुख की बात है कि कुछ लोगों के लिए यह *अधिक ही* साधारण है और उन्होंने सहभागिता सेवा को एक रहस्यमय बात बना दिया है। इसे एक जटिल समारोह बना

दिया गया है, जिसे ''मास'' का नाम दिया जाता है, जिसमें (यह दावा किया जाता है) रोटी यीशु के मांस में और दाख रस यीशु के लहू में बदल जाता है। (वे मानते हैं कि ये तत्व रोटी और दाखरस जैसे ही *लगते* और *स्वाद* देते हैं, पर फिर भी ज़ोर देकर कहते हैं कि ये प्रभु की देह और उसका लहू बन जाते हैं।) इस बात के सबूत के लिए, वे दिखाते हैं कि यीशु ने कहा, ''यह मेरी देह *है* '' और ''यह मेरा लहू *है* '' (मत्ती 26:26, 28)।

बाइबल की व्याख्या के लिए सहज बुद्धि का होना बहुत ही आवश्यक है। क्योंकि यीशु अपने चेलों के सामने खड़ा था–वह देह में था और उसका लहू उसकी नसों में बह रहा था–उसके कहने का यह अर्थ नहीं हो सकता था कि उसका मांस और लहू, रोटी और दाखरस हैं। उसने यहां एक अलंकार का इस्तेमाल किया, जिसे वह आम तौर पर इस्तेमाल करता था। उसने कहा, ''मैं दाखलता *हूं*'' और ''द्वार *मैं* हूं'' (यूहन्ना 15:5; 10:9)।[10] उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि वह दाखलता ही है (उस पर अंगूर नहीं लगे हुए थे) या वह कोई द्वार है (उस पर कब्ज़े नहीं लगे हुए थे), बल्कि उसके कहने का अर्थ था कि उसमें और दाखलता में, उसमें और द्वार में समानताएं हैं।

अलंकार की यह भाषा नई नहीं है। यदि मैं आपको कोई तस्वीर दिखाते हुए यह कहूं, ''यह मेरी पत्नी है'' तो आप यह नहीं मान लेंगे कि वह तस्वीर ही मेरी पत्नी है। आप जानते हैं कि तस्वीर से पता चलता है कि मेरी पत्नी ऐसी है। वैसे ही, रोटी और दाखरस हमारे प्रभु की देह और लहू को दिखाते हैं।

यीशु ने सबसे अविनाशी स्मारकों की स्थापना के लिए सबसे नाशवान सामग्रियों का इस्तेमाल किया। समय बीतने पर पत्थर घिस जाता है, कीमती धातुएं नष्ट हो जाती हैं और जवाहरात चोरी हो सकते हैं, परन्तु गेहूं और दाख खत्म नहीं होते। इस स्मारक को देखने के लिए हमें यरूशलेम की यात्रा या किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा करने की आवश्यकता नहीं है; यह पहले से ही हम सबकी पहुंच में है। यह हमारी पहुंच में है, यहां तक कि निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी इन दो साधारण सी चीज़ों को खरीद सकता है। यह यादगार शुद्ध, ईश्वरीय और परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई बुद्धि का उदाहरण है।

गीत।

प्रार्थना।

टिप्पणियां:

लोग प्रभु भोज के बारे में प्रश्न पूछते हैं। उदाहरण के लिए, ''यूखरिस्त,'' ''मास,'' ''सैक्रामेंट'' जैसे शब्द सुनकर वे चकित होते हैं और उन्हें समझ नहीं आता कि ''इस समारोह को क्या कहा जाना *चाहिए?* '' पवित्र शास्त्र में इस स्मारक के लिए चार नाम बताए गए हैं: ''प्रभु भोज'' (1 कुरिन्थियों 11:20); ''रोटी तोड़ना'' (प्रेरितों 2:42; प्रेरितों 20:7); ''सहभागिता'' (1 कुरिन्थियों 10:16)[11] और ''प्रभु की मेज़'' (1 कुरिन्थियों 10:21)। बाइबल की भाषा को ही मानें तो अच्छा है (1 पतरस 4:11)।

शायद सबसे अधिक पूछा जाने वाला प्रश्न है, ''हमें इसमें *कब* भाग लेना चाहिए?''

इस यादगार को स्थापित करते हुए यीशु ने बिना यह बताए कि कितनी बार और कब भाग लेना है, कहा, ''क्योंकि *जब कभी* तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु का ... प्रचार करते हो'' (प्रेरितों 2:42)। इसलिए कुछ लोगों ने निष्कर्ष निकाल लिया है कि वे जब चाहें, इसमें भाग ले सकते हैं। पास के नगर की एक कलीसिया के बोर्ड पर यह संदेश लिखा हुआ है: ''रविवार-होली कम्युनियन [का समय]; बुधवार-होली कम्युनियन [का समय]; गुरुवार तथा पवित्र दिनों में-होली कम्युनियन [का समय]।''

''कब?'' के प्रश्न का बाइबल में से उत्तर आरम्भिक कलीसिया के उदाहरण में मिल जाता है: मसीही लोग प्रभु भोज में ''सप्ताह के पहले दिन'' भाग लेते थे (प्रेरितों 20:7), जो आरम्भिक कलीसिया के लिए सार्वजनिक आराधना का विशेष दिन था (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)। सप्ताह के पहले दिन के अलावा किसी और दिन सहभागिता होने का बाइबल में कोई उदाहरण नहीं है। सप्ताह का पहला दिन (जिसे हम रविवार कहते हैं) मसीही लोगों के लिए विशेष स्मरणीय दिन है: सप्ताह के पहले दिन मसीह जी उठा और उसी दिन अपने चेलों को दिखाई दिया (मत्ती 28:1-6 और फिर यूहन्ना 20:26 में)। सप्ताह के पहले दिन ही कलीसिया की स्थापना हुई थी (प्रेरितों 2:1-4; लैव्यव्यवस्था 23:15, 16)।

बाइबल में यह भी संकेत मिलता है कि आरम्भिक कलीसिया सप्ताह के प्रत्येक पहले दिन प्रभु भोज में भाग लेती थी: वे ''सप्ताह के पहले दिन'' (1 कुरिन्थियों 16:2)[12] इकट्ठे होते और इकट्ठे वे ''रोटी तोड़ने *के लिए*'' (प्रेरितों 20:7) होते थे। क्योंकि प्रभु के दिन की प्रत्येक आराधना में सहभागिता सेवा होती थी, इसलिए उनका इसमें भाग लेना साप्ताहिक होता होगा। इस निष्कर्ष की कलीसिया की आरम्भिक शताब्दियों में परमेश्वर के प्रेरणा रहित मसीही लोगों द्वारा पुष्टि की गई है।[13] इतिहासकार जॉन लॉरेंस मोशेम ने लिखा है, ''मसीही आराधना में भजन, प्रार्थनाएं, वचन का पाठ, लोगों को संदेश देना होता था और इसकी समाप्ति प्रभु भोज के समारोह के साथ होती थी।''[14]

एक और प्रसिद्ध प्रश्न है, ''यह यादगार *किसके लिए* होती थी?'' मसीह ने कहा कि दाख का रस उसके ''लहू'' का प्रतीक है, ''जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया'' गया था (मत्ती 26:28)। इसलिए इसका विशेष महत्व उन लोगों के लिए है, जिन्होंने लहू से मोल ली गई क्षमा को अनुभव किया (प्रेरितों 2:38; 20:28; प्रकाशितवाक्य 1:5, 6)। इसके अलावा यीशु ने संकेत दिया कि यह भोज राज्य में लिया जाने के लिए है (मत्ती 26:29)। राज्य कलीसिया ही है (मत्ती 16:18, 19), इसलिए प्रभु की कलीसिया के सदस्यों के लिए यह यादगार है। इसलिए संसार के कई भागों में, केवल मसीही लोगों को ही सहभागिता सेवा के लिए निमन्त्रण दिया जाता है। कई स्थानों में मण्डलियों का विश्वास है कि 1 कुरिन्थियों 11:28 को इस स्थिति के लिए लागू किया जा सकता है: ''मनुष्य अपने आप को जांच ले।''[15] इसलिए वे सहभागिता सेवा में उपस्थित सभी लोगों को स्वयं निर्णय लेने देते हैं कि इसमें भाग लेना है या नहीं।

गीत।

टिप्पणियां:

अब हम सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न पर आते हैं: ''प्रभु भोज का *उद्देश्य* क्या है ?'' पुन: कुछ लोग परमेश्वर के प्रबन्ध की ''सीधाई'' (2 कुरिन्थियों 11:3) से संतुष्ट नहीं होते और इस अवसर के साथ रहस्यमयी आशिषों को जोड़ देते हैं। कुछ तो यह भी सिखाते हैं कि इस भोज में भाग लेने का उद्देश्य पापों की क्षमा प्राप्त करना है।

जैसे पहले कहा गया था, नये नियम के अनुसार, प्रभु भोज एक *मेमोरियल सर्विस* (यादगारी सेवा) है। हम में से अधिकतर लोगों के पास तस्वीरें तथा अन्य यादगारों जैसी निशानियां होती हैं, जिनसे हमें विशेष लोगों और विशेष घटनाओं को याद रखने में सहायता मिलती है। इसी प्रकार, हम प्रभु की मेज़ के पास उसे और उसके बलिदान को याद रखने के लिए इकट्ठे होते हैं। यह सुझाव दिया गया है कि भोज में भाग लेने के समय हमें पांच बातों को ध्यान में रखना चाहिए:

- हमें क्रूस की ओर *पीछे* देखकर याद रखना चाहिए कि यीशु ने हमारे लिए क्या किया।
- हमें यीशु की ओर *ऊपर* को देखना चाहिए, जो अब स्वर्ग में है। प्रभु भोज में भाग लेकर, हम इस बात की पुष्टि करते हैं कि वह मुर्दों में से जी उठकर अपने पिता के पास ऊपर उठाया गया। इसका अर्थ यह हुआ कि सहभागिता हमें आश्वस्त करती है कि मसीह हमारे लिए निवेदन करने को पिता के दाहिने हाथ है (रोमियों 8:34)।
- हमें मसीह के द्वितीय आगमन की ओर *आगे को* देखना चाहिए। पौलुस ने लिखा है कि हम प्रभु की मृत्यु का प्रचार करते हैं ''जब तक वह न आए'' (1 कुरिन्थियों 11:26)। एक अर्थ में, सहभागिता उसकी वापसी की शपथ का कार्य करती है। उसमें भाग लेकर हमें स्वर्ग में ''विवाह के बड़े भोज'' का पूर्व स्वाद मिलता है। जहां हम उसके साथ सहभागिता में बैठेंगे (प्रकाशितवाक्य 19:7, 9)।
- हमें साथी मसीहियों की ओर *बाहर को* देखना चाहिए। न केवल हम मसीह से सहभागिता करते हैं, बल्कि ''धन्यवाद का कटोरा'' और ''रोटी'' में भाग लेकर हम एक-दूसरे के साथ भी सहभागिता करते हैं (1 कुरिन्थियों 10:16)। ''इसलिए, कि एक ही रोटी है सो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं: क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं'' (1 कुरिन्थियों 10:17)।
- हमें अपनी जांच के लिए *भीतर* झांकना चाहिए। ''इसलिए मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए'' (1 कुरिन्थियों 11:28)।

हमें इस अद्‌भुत यादगार के लिए *तैयारी* कैसे करनी चाहिए ? विशेष तैयारी के साथ-

साथ सामान्य तैयारी करनी आवश्यक है। आम तौर पर हमें प्रभु-भोज के लिए अपने मनों और जीवनों को वैसे ही तैयार करना चाहिए, जैसे हम सर्वशक्तिमान की आराधना के लिए अपने आप को तैयार करते हैं। पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीहियों को बताया, "तुम प्रभु के कटोरे, और दुष्टात्माओं के कटोरे दोनों में से नहीं पी सकते! तुम प्रभु की मेज़ और दुष्टात्माओं की मेज़ दोनों के साझी नहीं हो सकते"[16] (1 कुरिन्थियों 10:21)। उनके लिए यह बात मेल नहीं खाती होगी कि शनिवार को मूर्तियों के आगे किए हुए बलिदान खा लें और रविवार को प्रभु-भोज में भाग ले लें। इसी प्रकार हमें अपने जीवनों को मसीह के सिद्धांतों के साथ मेल खाते बनाने की भरसक कोशिश करनी चाहिए।

भोज में भाग लेने के लिए विशेष तैयारी करनी भी आवश्यक है। मैं अपने मनों की तैयारी की बात कर रहा हूं, जिसमें हम मन की सही सोच में अपने आप को ढालें। याद रखें कि 1 कुरिन्थियों 11 में पौलुस ने क्या लिखा है:

> इसीलिए जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लोहू का अपराधी ठहरेगा। इसलिए मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए। क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है (आयतें 27-29)।

"जो कोई *अनुचित* रीति से प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लोहू का अपराधी ठहरेगा।" बचपन में मैंने सुना था कि इसका अर्थ भोज में भाग लेने के "योग्य" होना बताया जाता था-परन्तु यहां "योग्य" होना नहीं, बल्कि "अनुचित" तरीका शब्द है। "अनुचित रीति" का अर्थ हमारे चरित्र से नहीं, बल्कि इस अर्थ में है कि रोटी और दाखरस में *हम भाग कैसे लेते* हैं। हम में से कोई भी भोज में भाग लेने के योग्य नहीं है, पर उस पर ध्यान लगाते हुए जो प्रभु भोज से पता चलता है, उचित ढंग से हम सभी इसमें भाग ले सकते हैं।

बहुत से मसीही लोग भोज की सेवा के दौरान अपने मन को यीशु के बलिदान पर लगाए रहते हैं। हमने पहले ही पांच तरह से देखने का सुझाव दिया था, जो हम कर सकते हैं। कुछ और विचार भी हैं। कुछ लोग अपने मनों में क्रूस का चित्र बनाते और मन में मसीह के कष्ट सहने की कल्पना करते हैं। कुछ लोग क्रूस के महत्व पर ध्यान लगाते हैं कि उनके लिए इसका क्या अर्थ है।[17] और जिनसे वे प्रेम रखते हैं, उनके लिए क्या है। कुछ लोग मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने पर बाइबल में से वचन पढ़ते हैं। कुछ लोग उस सब को याद दिलाने वाले गीत गाते हैं, जो मसीह ने हमारे लिए किया। कहीं पर भी दो लोग एक विचार वाले नहीं होंगे, क्योंकि सब में कहीं न कहीं थोड़ा-बहुत अन्तर अवश्य है।[18] भोज लेने के समय अपने मनों को एकाग्र करने के लिए हम जो भी ढंग अपनाएं, हमें उस समय को अपने विचारों को प्रभु के बलिदान पर ध्यान लगाने के लिए इस्तेमाल करना चाहिए।

प्रभु भोज।
वैकल्पिकः चंदे पर संक्षिप्त टिप्पणियां।
चंदा।
अन्तिम टिप्पणियां और निमन्त्रण।

प्रभु के प्रत्येक दिन प्रभु भोज में भाग लेना बहुत ही आवश्यक है। जब हम सहभागिता सेवा को छोड़ना चुनते हैं तो ...

- हम मसीह की आज्ञा की उपेक्षा करते हैं। यीशु ने कहा, ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे'' (यूहन्ना 14:15; देखें यूहन्ना 15:14)।
- हम प्रभु को स्मरण करने का अवसर खो देते हैं। उसने कहा, ''... मेरे स्मरण के लिए यही किया करो'' (1 कुरिन्थियों 11:24)।
- हम उसकी मृत्यु का प्रचार करने के अवसर को नज़रअन्दाज़ करते हैं। यीशु ने कहा कि हम जब भी इस रोटी में से खाते और कटोरे में से पीते हैं, तो उसकी मृत्यु का प्रचार करते हैं (1 कुरिन्थियों 11:26)।
- हम संकेत देते हैं कि यीशु के लहू का हमारे लिए कोई विशेष महत्व नहीं है। हम अपने आप को उस मनुष्य के साथ मिलाते हैं ''जिसने परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रौंदा, और वाचा के लोहू को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है'' (इब्रानियों 10:29)।
- हम दूसरों के लिए, विशेषकर विश्वास में नये लोगों के लिए गलत नमूना हैं। मसीह ने कहा कि यदि हम एक विश्वासी के लिए ठोकर का कारण बनते हैं, तो भला होता कि बड़ी चक्की का पाट हमारे गले में लटकाकर हमें गहरे समुद्र में डुबो दिया जाता (मत्ती 18:6)।
- हम दूसरों में यह ऐलान करते हैं कि हमारा धर्म विश्वास का नहीं, बल्कि हमारी सुविधा का है। हम दिखाते हैं कि हमारी प्राथमिकताएं गलत हैं, यानी जिन बातों को पहल देनी चाहिए, हमने उन्हें पहल देना सीखा ही नहीं है (मत्ती 6:33)।

जब हम पवित्र लोगों के साथ आराधना करने को नज़रअन्दाज़ करते और प्रभु भोज में भाग लेने में असफल रहते हैं, तो हमें अपने भाइयों और बहनों के साथ और परमेश्वर के साथ इसमें सुधार करने की आवश्यकता है (इब्रानियों 10:25, 26; याकूब 5:16)।

यदि आप मसीही हैं, तो अपने आप से पूछें, ''क्या मैंने प्रभु-भोज में भाग लेने में आनाकानी की है?'' यदि हां, तो अपनी गलती को मानें, दूसरे मसीहियों से अपने लिए प्रार्थना करने को कहें और परमेश्वर से क्षमा की याचना करें (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9)। यदि आप मसीही नहीं हैं, तो आपको उस सब की, जो मसीह आपको दे सकता है *आवश्यकता* है, जिसमें उसके साथ साप्ताहिक सहभागिता से मिलने वाली सामर्थ भी है। मैं आपसे उसमें विश्वास करके और अपने जीवन को बदलने के लिए तैयार होकर बपतिस्मा (डुबकी) लेने

का आग्रह करता हूं (गलातियों 3:26, 27; मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38)। यदि आप *किसी* तरह प्रभु की बात को मानना चाहते हैं, तो उसे मानने का समय *अभी* है।

निमन्त्रण का गीत।
अन्तिम गीत।
अन्तिम प्रार्थना।

नोट्स

गीतों, प्रार्थनाओं, वचन पाठ और टिप्पणियों का क्रम केवल एक सुझाव है; जहां आप आराधना करते हैं, उसके अनुकूल इन्हें बदल लें। आराधना के दौरान गाए जाने वाले गीत क्रूस या प्रभु भोज पर क्रेन्द्रित होने चाहिए। प्रार्थनाओं में अगुआई करने वाले पुरुष मेज़ की सेवा से पहले रोटी और दाखरस के बारे में अपनी टिप्पणियां जोड़ सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]साप्ताहिक बुलेटिन, "आई वाज़ देयर," टैंथ एण्ड फ्रांसिस चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, ओक्लाहोमा सिटी, लगभग 1956–60 से लिया गया। [2]इस प्रवचन का एक स्रोत जॉर्ज डब्ल्यू. डिहॉफ, *गास्पल सरमन्स* (मरफरीस्बोरो, टैनिसी: डिहॉफ़ पब्लिकेशंज़, 1953), 168–82 है। [3]मैंने अपने सुनने वालों में परिचित कई स्मारकों की सूची दी है। आप जहां रहते हैं, वहां ऐसे स्मारकों का इस्तेमाल करें जिनसे लोग परिचित हों। [4]अमेरिका में, हम पतले, चौरस नमकीन बिस्कुटों के डिब्बे खरीद सकते हैं, जिनमें खमीर होता है। इस और अगली वस्तु ("फ्रैंच लोव्स") की जगह ऐसी वस्तुओं का इस्तेमाल करें जो आपके क्षेत्र में पाई जाती हैं। [5]"फ्रैंच लोव्स" हमारे यहां लम्बी, पतली ब्रेड को कहा जाता है। [6]खमीर टाटरी की झाग जैसी एक सामग्री है, जिससे गाढ़ा घोल या गूंधा हुआ आटा फूल जाता है, विशेषकर खमीरा करने पर। [7]आप चाहें तो घर में इस्तेमाल होने वाली अखीमीरी रोटी का उदाहरण दे सकते हैं। भारत में लोग स्वयं रोटी बनाते हैं–अनुवादक। अमेरिका में बहुत सी मण्डलियां फसह के भोज के लिए यहूदियों के लिए पैक की गई अखमीरी बिस्कुट या पतली रोटी के डिब्बे इस्तेमाल करती हैं। [8]जो लोग वहां रहते हैं, जहां अंगूर का ताजा रस या ताजे अंगूर खरीदे नहीं जा सकते वे आम तौर पर सूखे अंगूर (किशमिश) खरीदकर उन्हें उबालकर उनका रस निकाल लेते हैं। [9]कहने का अर्थ यह नहीं कि केवल अंगूर का लाल रस ही इस्तेमाल किया जा सकता है। किसी भी रंग का अंगूर का रस सही होगा, पर अधिकतर लोग लालगी वाले रस को प्राथमिकता देते हैं। अमेरिका में, मिले जुले अंगूरों से बना वैल्च का अंगूर का रस सबसे प्रसिद्ध है। [1]इस अलंकार के कई उदाहरण नये नियम में मिल सकते हैं (देखें लूका 8:11; 1 कुरिन्थियों 10:4)।

[11]यूनानी शब्द के अनुवाद "सहभागिकता" का अर्थ "साझे का होना" है। इसलिए 1 कुरिन्थियों 10:16 में NASB इसका अनुवाद "a sharing" (सांझ) किया गया था। [12]यहां "सप्ताह के पहले दिन" ही है; परन्तु क्योंकि हर सप्ताह का पहला दिन होता है, इसलिए निर्देश *प्रत्येक* पहले दिन के लिए है। पुराने नियम में इससे मिलते-जुलते शब्द के लिए, देखें निर्गमन 20:8. '*विश्रामदिन* को स्मरण रखना" का अर्थ था कि सप्ताह का *हर* सातवां दिन पवित्र माना जाए। [13]इन लेखकों में जस्टिन मार्टिर था (*अपोलॉजी* 1.67)। [14]जॉन लॉरेंस मौशेम, *एन एक्लेसियस्टिकल हिस्टरी, एंशियंट एण्ड मॉडर्न,* अनुवाद आर्किबल्ड मैक्लेन, अंक 1 (न्यू यॉर्क: हारपर एण्ड ब्रदर्स, 1871), 303. [15]संदर्भ में, आयत "कौन" के बजाय "कैसे" की बात करती है,

परन्तु व्यापक प्रासंगिकता बनाई जा सकती है। [16]"दुष्टात्माओं का कटोरा" और "दुष्टात्माओं की मेज़" मूर्तियों को चढ़ाए गए भोज को कहा गया है। [17]मेरे लिए प्रभु भोज परिप्रेक्ष्य में रखने की बात है। मैं छोटी–छोटी बातों से तनाव में आ जाता हूं, पर सहभागिता सेवा मुझे याद दिलाती है कि वास्तव में आवश्यक क्या है। [18]कुछ लोग सुझाव देते हैं कि भोज लिए जाने के समय हम क्रूस के गीत गाएं या उससे सम्बन्धित वचन पढ़ा जाए। कुछ कार्य वचन के अनुसार उसमें भाग लेने पर ध्यान लगाने में सहायता हो सकते हैं, पर कुछ से ध्यान भंग हो सकता है। प्रभु भोज में भाग लेना ऐसा निजी मामला है कि इसे प्रभु के साथ व्यक्तिगत सहभागिता कहा जाता है, जिसे किसी को यह बताने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए कि वह सहभागिता कैसे हो। सहभागिता में शांति से भाग लेना सबसे अच्छा है, जिसमें किसी को प्रभु के साथ सहभागिता करने में रुकावट न हो।

यूहन्ना 14-17 पर अतिरिक़्त टिप्पणियां

14:1 : इस आयत में यूनानी शब्द का अनुवाद ‘‘विश्वास’’ निश्चयात्मक भी हो सकता है और आदेशात्मक भी। इस आयत का अनुवाद ‘‘तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो’’ (निश्चयात्मक) या ‘‘परमेश्वर में विश्वास रखो, मुझ में भी विश्वास रखो’’ (आदेशात्मक) हो सकता है।

14:2 : यूनानी शब्द का अनुवाद ‘‘रहने के स्थान’’ रहने के लिए स्थान का संकेत देता है। 14:23 में इस शब्द का अनुवाद ‘‘वास’’ किया गया है। इस शब्द में स्वर्ग के स्थायित्व पर ज़ोर दिया गया है। (स्वर्ग कोई तम्बू नहीं, बल्कि स्थायी निवास है।) यह तथ्य कि ‘‘*बहुत से* रहने के स्थान’’ हैं, प्रभु के पर्याप्त प्रबन्ध का संकेत देता है।

14:8 : फिलिप्पुस के मन में निर्गमन 33:20 वाले परमेश्वर के शब्द हो सकते हैं: ‘‘तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता; क्योंकि मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता!’’

14:9 : कहते हैं कि यीशु ‘‘परमेश्वर का चेहरा है।’’ मसीह के विषय में सीखते हुए हमें परमेश्वर के स्वभाव के बारे में बहुत कुछ पता चलता है।

14:22 : ‘‘यहूदा (इस्करियोती नहीं)’’ को ‘‘याकूब का पुत्र यहूदा’’ और ‘‘तद्दै’’ भी कहा जाता था।[1] यह यहूदा उलझन में था, क्योंकि राज्य की उसकी भ्रमित विचारधारा के अनुसार मसीहा ने पृथ्वी पर एक राजनैतिक राज्य पर शासन करना था। यदि ऐसा होता, तो यीशु अपने आप को संसार पर प्रकट क्यों नहीं करना चाहता था?

14:26; 16:13 : दोनों आयतें पूरे नये नियम के परमेश्वर की प्रेरणा से होने का संकेत देती हैं: आत्मा ने प्रेरितों को वे बातें याद दिलाने के लिए आना था, जो यीशु ने उन्हें सिखाई थीं (सुसमाचार के वृत्तांत), आत्मा ने प्रेरितों को सब बातें (प्रेरितों के काम और पत्रियां) सिखानी थीं, और उसने होने वाली बातें (प्रकाशितवाक्य की पुस्तक) भी बतानी थीं।

14:28 : ‘‘... पिता मुझ से बड़ा है’’ कहकर मसीह परमेश्वर होने या पिता के साथ अपनी समानता का इनकार नहीं कर रहा था (देखें यूहन्ना 10:30), बल्कि वह पृथ्वी पर अपनी स्थिति की बात कर रहा था; मनुष्य का रूप धारण करने के लिए उसने कुछ विशेष ईश्वरीय विशेषाधिकारों को छोड़ा था (फिलिप्पियों 2:6-8)। पिता के पास ऊपर उठाए जाने पर, उस पर से इस संसार की सीमाएं हटा ली गई थीं और उसे पहले वाली महिमा फिर से मिल गई थी (यूहन्ना 17:5; फिलिप्पियों 2:9-11)।

14:30; 16:11 : ‘‘इस संसार का सरदार’’ शैतान है। शैतान से मसीह का निर्णायक युद्ध क्रूस पर हुआ था (देखें यूहन्ना 12:31, 32; इब्रानियों 2:14)। शैतान हम से युद्ध जीत सकता है, क्योंकि हम पर वह पाप करने का आरोप लगा सकता है, पर यीशु में कोई पाप नहीं था (इब्रानियों 4:15)। मसीह कह सकता था, ‘‘मुझ में उसका [शैतान का] कुछ नहीं है।’’ इस संसार के हाकिम ‘‘को मसीह में ऐसा कुछ नहीं मिलना था, जो बाद में उसे उस पर अधिकार जताने का अधिकारी बनाता या कोई कारण बनाता।’’[2]

15:1 : यीशु ''सच्ची दाखलता'' थी, ''जिसकी दूसरी सब दाखलताएं केवल नकल हैं।''[3] पुराने नियम में, दाखलता इस्राएल का प्रतीक थी (भजन संहिता 80:8; यशायाह 5:1–7; यिर्मयाह 2:20, 21; यहेजकेल 15:1–8; 19:10–14; होशे 10:1)।

15:2 : ''छांटने'' की परमेश्वर की प्रक्रिया अपने बच्चों के प्रेमपूर्वक अनुशासन का एक और ढंग है (देखें इब्रानियों 12:4–13)।

15:15 : साधारणतया दासों को बिना कोई सवाल पूछने की अनुमति दिए काम दिया जाता था। इसके विपरीत, मित्रों से कुछ करवाने के लिए उनसे पूछा जाता है कि वे यह करेंगे और उन्हें समझाया जाता है कि यह क्यों करना आवश्यक है। यीशु प्रेरितों को अपने मित्र कह सकता था, क्योंकि उसने उन्हें परमेश्वर का प्रकाशन दिया था।

15:20क : यह यूहन्ना 13:16 की बात है।

15:22, 24 : यीशु यह नहीं कह रहा था कि यदि वह न आता तो यहूदी बिना पाप के होते। हम सब पाप करते हैं (रोमियों 3:23) और पाप के प्रति अज्ञानता कोई बहाना नहीं है (प्रेरितों 17:30)। मसीह कह रहा था कि वे *उसे ठुकराने* के विशेष पाप के दोषी न होते यदि उसने उनके बीच में प्रचार करके आश्चर्यकर्म न किए होते। क्योंकि उसने यह सब किया इसलिए उनके पास कोई बहाना नहीं था।

15:25 : यह उद्धरण भजन संहिता 35:19; 69:4 से लिया गया है।

15:26, 27 : प्रेरितों ने दोहरी गवाही देनी थी: उन्होंने जो कुछ अपनी आंखों से देखा था, उसकी गवाही देनी थी (आयत 27; देखें प्रेरितों 1:22), और उन्होंने पवित्र आत्मा की गवाही सुनकर लोगों को बतानी थी (आयत 26)।

16:5, 6 : पतरस ने पूछा था, ''हे प्रभु, तू कहां जाता है ?'' (यूहन्ना 13:36), और थोमा ने उसके जाने के स्थान पर आश्चर्य किया था (14:5)। इसलिए जब यीशु ने कहा, ''तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता कि तू कहां जाता है ?'' तो वह केवल एक ही प्रश्न की बात नहीं कर रहा था। शायद उसके कहने का अर्थ था कि उन्होंने शब्द तो कहे थे पर, उनकी दिलचस्पी वास्तव में ''कहां'' में नहीं, बल्कि इस बात में थी कि वह क्यों जा रहा था। उसके जाने की बात से उनके मन शोक से भर गए थे।

16:20 : संसार ने यीशु की मृत्यु पर आनन्द किया था (देखें लूका 22:5), जबकि उससे प्रतीति रखने वाले लोग रोए थे (यूहन्ना 20:11)।

16:21, 22 : बच्चे का जन्म पीड़ा से होता है, पर बाद में जनने की पीड़ाएं आनन्द में बदल जाती हैं। वैसे ही मसीह की मृत्यु से पहले तो उसके अनुयायी निराश हो गए थे, पर अब उसकी मृत्यु संसार को आनन्द देती है।

16:23 : उस समय, प्रेरितों के मन में कई प्रश्न उठे थे (13:36; 14:5, 8); परन्तु यीशु के परमेश्वर के पास ऊपर उठा लिए जाने के कारण, उन्हें उससे प्रश्न पूछने की आवश्यकता नहीं होनी थी। परमेश्वर ने (पवित्र आत्मा के द्वारा) उन्हें वह सब बता देना था, जिसकी उन्हें आवश्यकता थी।

16:26, 27 : यीशु यह नहीं कह रहा था कि वह उनकी ओर से पिता के पास कोई विनती *नहीं* करेगा। जैसा कि पाठ में देखा गया था, वह हमारे लिए निवेदन करता है।

बल्कि वह यह ज़ोर दे रहा था कि उसके लिए पिता को उनकी सहायता के लिए *मनाने* की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि पिता ने उनसे प्रेम किया है। प्रेम न रखने वाले परमेश्वर की भ्रमित अवधारणा से ''निवेदन करने वाले'' (जिसमें मरियम और कुछ ''संतों'' के नाम बताए जाते हैं) मनुष्यों के बनाए हुए कई नियम बन गए, जो (मनुष्यों की शिक्षा के अनुसार) परमेश्वर को अपने बच्चों की सहायता के लिए *बाध्य* करते हैं। कितनी भयभीत करने वाली शिक्षा है यह!

16:32 : अकेलापन खतरनाक है; पर एक मसीही वास्तव में कभी अकेला नहीं होता, क्योंकि उसका पिता हमेशा उसके साथ होता है (2 तीमुथियुस 4:16-18 के साथ तुलना करें)।

17:2 : परमेश्वर ने यीशु को स्वर्ग और पृथ्वी में सारा अधिकार दिया है (मत्ती 28:18)।

17:3 : अनन्त जीवन को परमेश्वर तथा यीशु के साथ अनन्तकाल तक होना कहा जा सकता है, जबकि अनन्त मृत्यु अनन्तकाल के लिए परमेश्वर और मसीह से अलग होना है (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। एक अर्थ में, हम अब भी अनन्त जीवन पा सकते हैं, क्योंकि हम परमेश्वर और यीशु (के साथ निकट सम्बन्ध है) को ''जान सकते'' हैं। (परन्तु, हमारे लिए इस पृथ्वी पर रहते हुए उस सम्बन्ध का टूटना सम्भव है, जिससे वह आशीष हम से छिन जाए [देखें यूहन्ना 15:6])।

17:11, 14, 16 : प्रेरितों की तरह, हम ''जगत में'' तो हैं (आयत 11) परन्तु ''संसार के'' नहीं हैं (आयतें 14, 16)।

17:12 : यह दावा कि ''विनाश के पुत्र को छोड़ उनमें से कोई नाश न हुआ'' एक भविष्यवाणी थी कि अधिकतर प्रेरितों ने नहीं मरना था (देखें यूहन्ना 18:8, 9)। ''विनाश का पुत्र'' यहूदा ही था। अनुवादित शब्द ''विनाश'' एक मिश्रित यूनानी शब्द है, जिसमें ''नाश'' का विचार है। यहूदा का अन्त मसीह को पकड़वाने के अपने पाप से मन न फिराने के कारण अनन्त नाश (यानी नरक) था।

17:17क, 19 : ''पवित्र कर'' का अर्थ है ''अलग कर।'' हमें वचन की बात मानने और मसीही बनने पर वचन के द्वारा परमेश्वर की सेवा के लिए ''अलग'' किया गया है (देखें 1 कुरिन्थियों 6:11)।

17:18 : परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में भेजा था (देखें 17:3, 8, 21, 23, 25) और मसीह प्रेरितों को भेज रहा था। ''प्रेरित'' शब्द का अर्थ है ''भेजा हुआ।''

टिप्पणियां

[1]''मसीह का जीवन, भाग 2'' पर पृष्ठ 179 में देखें। [2]जे. डब्ल्यू मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 666. [3]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमेंटरी,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 355 में उद्धृत, लेखक अज्ञात।

भविष्यवाणी में मसीह

(यूहन्ना 5:30–47)

''परन्तु मेरे पास जो गवाही है वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी है: क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है अर्थात् यही काम जो मैं करता हूं, वे मेरे गवाह हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है। और पिता जिस ने मुझे भेजा है, उसी ने मेरी गवाही दी है: ... तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है। फिर भी तुम जीवन पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते।... यह न समझो, कि मैं पिता के साम्हने तुम पर दोष लगाऊंगा: तुम पर दोष लगाने वाला तो है, अर्थात् मूसा जिस पर तुम ने भरोसा रखा है। क्योंकि यदि तुम मूसा की प्रतीति करते, तो मेरी भी प्रतीति करते, इसलिए कि उस ने मेरे विषय में लिखा है। परन्तु यदि तुम उस की लिखी हुई बातों की प्रतीति नहीं करते, तो मेरी बातों की क्योंकर प्रतीति करोगे (यूहन्ना 5:36–47)।

परिचय

यदि मैं आपको बताऊं कि आपके जन्म से सैकड़ों वर्ष पूर्व, आपके जीवन में होने वाली घटनाएं पहले से बता दी गई थीं, यानी आपके जन्म का समय, आपके जन्म का स्थान, आपके परिवार की पृष्ठभूमि, आपका व्यवहार, आपके जीवन की बहुत सी घटनाएं और उस ढंग की स्पष्ट तस्वीर कि आपकी मृत्यु कैसे होगी तो आपको कैसा लगेगा? असम्भव? हां, मनुष्य के लिए यह असम्भव ही है, पर परमेश्वर के लिए नहीं। *यीशु* के जीवन का सम्पूर्ण इतिहास उसके जन्म लेने से सैकड़ों वर्ष पहले लिख दिया गया था!

पुराने नियम की भविष्यवाणी का बल

यीशु ने अपने ईश्वरीय होने के चार गवाह बताए (यूहन्ना 5:30–47)। एक गवाह *पवित्र शास्त्र* है।[1] पुराने नियम में मसीहा के सम्बन्ध में कई हवाले दिए गए थे: यीशु ने वही मसीहा होने का दावा किया (लूका 24:25–27)। विचार करें कि वह दावा कितना स्पष्ट था। यहूदी इससे अनभिज्ञ नहीं थे, क्योंकि वे पवित्र शास्त्र को जानते थे। वे मसीहा की राह देख रहे थे। वे किसी भी धोखेबाज के जीवन से मिलाकर इसे जान सकते थे। यीशु ने मसीहा के लिए ठहराई गई हर शर्त पूरी करने का दावा किया, *वे उसके दावे का खण्डन नहीं कर सके थे।* यदि उन्हें *एक* भी भविष्यवाणी मिल जाती जो यीशु के जीवन तथा सेवकाई से पूरी नहीं हुई, तो उसके सारे दावे खोखले साबित होते।

पिन्तेकुस्त के दिन के बाद से प्रचार करते हुए, प्रेरित यही दावा करते थे कि यीशु ही मसीहा है। अब भी, विद्वान यहूदी इस दावे का खण्डन नहीं कर सकते थे। यीशु परमेश्वर का पुत्र था और परमेश्वर का पुत्र है। कोई मनुष्य उन सभी भविष्यवाणियों को पूरा नहीं कर *सकता* था जिन्हें यीशु ने पूरा किया; कोई छलिया यहूदियों को मूर्ख नहीं बना सकता था।

सैकड़ों विद्वानों द्वारा पवित्र शास्त्र के एक दावे की तुलना कई भविष्यवाणियों से करने के कारण कोई छलिया कहीं न कहीं कोई चूक कर ही सकता था।

इसके अलावा, भविष्यवाणी की बातें यीशु के नियन्त्रण में नहीं थीं: उसकी वंशावली, उसके जन्म का स्थान, अबोध बालक के रूप में मिस्र में ले जाया जाना। भविष्यवाणियों का ऐसे पूरा होना जुगत लड़ाकर नहीं किया जा सकता था। हमें यीशु को वही मानना चाहिए, जो वह है!

पुराने नियम की भविष्यवाणी का पूरा होना

मसीहा के सम्बन्ध में भविष्यवाणियां उत्पत्ति 3:15 और 12:3 से आरम्भ होती हैं। मनुष्यों के युगों के अंधकार में से गुज़रने पर ऐसी आयतें उद्धारकर्त्ता के आने की राह देखने के लिए प्रेरित करती थीं।

सैकड़ों भविष्यवाणियां मसीह के बारे में बताती हैं, परन्तु नीचे दिए गए उदाहरण हमारी बात को समझाने के लिए काफ़ी हैं। मसीह ने अपने जन्म से सैकड़ों वर्ष पूर्व लिखे गए पवित्र शास्त्र की बातों को पूरा किया।

समय

पुराना नियम बताता है कि मसीहा का राज्य किस समय स्थापित होना था। दानिय्येल 2:44 संसार के चौथे राज्य, रोमी साम्राज्य की बात यह कहते हुए करता है, ''उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसा राज्य उदय करेगा, जो अनन्तकाल तक न टूटेगा। ...'' यीशु के जन्म के वृत्तांत से आरम्भ करते हुए, लूका 2:1 रोमी सम्राट कैसर अगस्तुस द्वारा जनगणना के लिए दी गई आज्ञा के समय की बात करता है।

दानिय्येल 9:25 स्पष्ट करता है, ''यरूशलेम के फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषिक्त प्रधान के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे। ...'' यद्यपि इस आयत में वर्णित सप्ताहों की गणना करने के प्रयास से कठिन प्रश्न खड़े हो जाते हैं, पर सामान्य विचार स्पष्ट है कि एक बहुत बड़ी घटना होने वाली थी। इस घटना से ''अपराध का होना बन्द हो, और पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित किया जाए, और युगानुयुग की धार्मिकता प्रकट हो; और दर्शन की बात पर और भविष्यवाणी पर छाप दी जाए, और परम पवित्र का अभिषेक किया जाए'' (दानिय्येल 9:24)। जैसा कि नील प्रायोर ने कहा है, ''ये बातें मसीहा द्वारा ही लाई जा सकती थीं।''

मलाकी 3:1 में उस भविष्यवक्ता ने संदेश दिया था कि प्रभु अचानक अपने मन्दिर में आएगा। यीशु की सेवकाई आरम्भ होने के समय मन्दिर का पुनर्निर्माण हेरोदेस द्वारा किया जा रहा था।

मसीह की वंशावली

उत्पत्ति 22:18 में परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की थी, ''पृथ्वी की सारी जातियां

अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी: क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है।'' अब्राहम के पोते याकूब (इस्राएल) ने अपने पुत्रों को आशीष देते हुए, भविष्यवाणी की थी, ''जब तक शीलो न आए, तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा, न उनके वंश से व्यवस्था देने वाला अलग होगा; ...'' (उत्पत्ति 49:10)। यिर्मयाह 23:5, 6 में हम पढ़ते हैं, ''... मैं दाऊद के कुल में एक धर्मी अंकुर उगाऊंगा, और वह राजा बनकर बुद्धि से राज्य करेगा।...'' मसीहा की वंशावली में अब्राहम, यहूदा और दाऊद का नाम आता था। मत्ती 1:2, 3 और 6 आयतों में दी गई वंशावली में देखें कि यीशु के पूर्वजों के रूप में अब्राहम, यहूदा और दाऊद का नाम दिया गया है। अन्य आयतों से इस बात की पुष्टि होती है कि यीशु अब्राहम (गलातियों 3:16), यहूदा (इब्रानियों 7:14) और दाऊद (2 तीमुथियुस 2:8) का वशंज था।

मसीह का जन्म स्थान

यह भविष्यवाणी मीका 5:2 में दी गई थी: ''हे बैतलहम एप्राता, ... तुझ में से मेरे लिए एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करने वाला होगा; और उसका निकलना प्राचीनकाल से वरन अनादि काल से होता आया है।'' यहूदी विद्वान इस भविष्यवाणी से परिचित थे और राजा हेरोदेस द्वारा यह पूछे पर कि मसीहा का जन्म कहां होना चाहिए उन्होंने इसका जवाब दिया था (मत्ती 2:5, 6)। यीशु का जन्म वहीं हुआ जहां भविष्यवक्ताओं ने कहा था कि उसका जन्म होगा (लूका 2:4-6)।

मसीह का जीवन

मसीहा के जीवन से सम्बन्धित कई तथ्य पुराने नियम में दिए गए हैं। ये यीशु के जीवन में पूरे हुए थे। मसीहा को ''मिस्र से बुलाया'' जाना था (होशे 11:1; देखें मत्ती 2:13-15)। उसने विकट परिस्थितियों में बड़ा होना था (यशायाह 53:2; देखें मत्ती 2:19-23; यूहन्ना 1:46)। उसकी सेवकाई से पहले एलिय्याह जैसा एक व्यक्ति आना था, जिसने उसके लिए मार्ग तैयार करना था (यशायाह 40:3; मलाकी 3:1; देखें मत्ती 17:10-13; मरकुस 1:2-4; लूका 1:17)। उसने अपनी सेवकाई में बहुत भलाई करनी थी (यशायाह 35:5, 6; मत्ती 11:2-5; लूका 7:21, 22)। तौ भी उससे घृणा होनी थी और उसने ठुकराया जाना था (यशायाह 53:3; देखें यूहन्ना 1:11; 15:18, 24)।

मसीह का अंतिम सप्ताह

जकर्याह ने यरूशलेम में गधे पर सवार होकर एक राजा के आने की बात की, जो विजयी प्रवेश की स्पष्ट भविष्यवाणी थी (जकर्याह 9:9; मरकुस 11:1-10)। भविष्यवक्ता ने परमेश्वर के घर में कुम्हार के पास फैंके गए चांदी के तीस सिक्कों की भी बात की; यह भविष्यवाणी मसीह के यहूदा द्वारा पकड़वाए जाने के सम्बन्ध में पूरी हुई थी (देखें जकर्याह 11:12, 13; मत्ती 26:14; 27:5-7)। यशायाह ने यीशु की मृत्यु का कारण बनने वाली घटनाओं का दुखद विवरण बताया (यशायाह 50:6; 53:7; देखें प्रेरितों 8:32-35)।

मसीह की मृत्यु

पुराने नियम में कहा गया था कि मसीहा ''काटा जाएगा'' जो भयंकर मृत्यु का संकेत था (यशायाह 53:8; दानिय्येल 9:26), और त्यागा जाएगा (भजन संहिता 22:1, 6-8, 16-18)। उसने बेधा जाना था (भजन संहिता 22:16; जकर्याह 12:10), परन्तु उसकी कोई हड्डी नहीं टूटनी थी (भजन संहिता 34:20)। यह तथा अन्य भविष्यवाणियां यीशु की मृत्यु में नाटकीय ढंग से पूरी हुईं। (पढ़ें यूहन्ना 19:23, 24, 34, 36, 37.)।

मसीह का गाड़ा जाना

मसीह के गाड़े जाने की परिस्थितियों तक की भविष्यवाणी उसके जन्म से पहले हो गई थी। उसने दुष्टों के साथ मरना परन्तु धनवान के साथ गाड़े जाना था (यशायाह 53:9)। ये बातें भी वैसे ही पूरी हुईं। मत्ती 27:57-60 का वृत्तांत पढ़ें।

सारांश

ये तथा अन्य भविष्यवाणियां हमारे विश्वास को दृढ़ करने के लिए पर्याप्त जानकारी उपलब्ध कराती हैं। क्या हम सचमुच विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है? तो फिर उसके विश्वास के अनुसार कार्य करें! (पढ़ें मत्ती 7:21; लूका 6:46.)

टिप्पणी

[1]यीशु द्वारा तीन अन्य नाम परमेश्वर, यूहन्ना और आश्चर्यकर्मों के थे।

गतसमनी बागः
एक वर्णनात्मक ढंग

''वर्णनात्मक प्रवचन'' में केवल कहानी बताकर, सुनने वालों को थोड़ा बहुत उसे अपने ऊपर लागू करने दिया जाता है। पवित्र शास्त्र के कुछ भाग वर्णनात्मक ढंग के लिए पुकारते हैं और बाग में यीशु ऐसा ही एक भाग है। इस ढंग को गतसमनी की कहानी के साथ अपनाने का निर्णय लेने की कोशिश से आपको इस घटना से सम्बन्धित बाइबल पाठ तथा प्रवचन में इस्तेमाल के लिए सामग्री मिल जाएगी। विचार बढ़ाने के लिए नीचे दी गई बातें उपयोगी हैं।

आप ऊपरी कमरे के दृश्यों की समीक्षा करते हुए आरम्भ कर सकते हैं। इनसे गतसमनी की भावनाओं के साथ जुड़ने में सहायता मिलती है।

यीशु और उसके चेलों के ऊपरी कमरे से निकलकर यरूशलेम की तंग गलियों में से जाने की कल्पना करें: ''नगर सो रहा था। अपनी दरी पर सोने की कोशिश करते हुए यात्री के अलावा, जिसे नींद नहीं आ रही थी, अपने घर की ओर तेज़ी से जाते घुमक्कड़ की पदचाप या चक्कर लगाते हुए प्रहरी के कदमों की आहट के अलावा सब शांत था।''[1]

''गतसमनी की ओर जाते हुए उन्होंने किद्रोन [या केद्रोन] नाला पार किया, जिसका पानी सर्दी में आने वाली वर्षा से बढ़ गया था और फसह के पर्व पर बलिदान किए गए जानवरों के लहू से लाल था।''[2] ''[मन्दिर में होमबलियों की] वेदी से किद्रोन नाले के साथ मिलता एक नाला था और उस नाले में से फसह के मेमनों का लहू बहा दिया जाता था। जब यीशु ने किद्रोन नाला पार किया तो यह अभी भी बलिदान किए गए मेमनों के लहू से लाल था; और ऐसा करते हुए, उसके मन में अपने ही बलिदान की बात स्पष्ट थी।''[3]

उनके गतसमनी में प्रवेश करने के समय ''चांद पूरा दिखाई दे रहा था और बाग के पेड़ चांदनी में नहाए लग रहे थे। पुराने पेड़ों के भूरे हरे पत्तों पर एक ठण्डी हवा चली,''[4] ''उन पुराने भूरे पत्तों वाले गांठदार पेड़ों पर।''[5] ''यद्यपि पेड़ों ने मई तक खिलना था, परन्तु पिछली शरद ऋतु की कटाई से कोल्हू पर तेल की सुगंध अभी भी आ रही थी।''[6]

अपने आप को यीशु की जगह रखकर उसके मन की पीड़ा की कल्पना करने की कोशिश करें। आप भूमि पर, पत्थरों में अपना सिर डाले हुए (और उस क्षेत्र की विरल भूमि), अपना मन परमेश्वर के सामने उंडेल रहे हैं। अपनी सभी ज्ञानेन्द्रियों का इस्तेमाल करें: आपको क्या सुनाई देता है? आपको क्या दिखाई देता है? आप क्या महसूस करते या सुनते हैं? ''उसके नाक के ऊपर से पसीना गिरा। यह उसकी आंखों में से होते हुए जलते हुए, जमे हुए खून की तरह भूमि पर गिरा।''[7]

फिर, थके हुए चेलों की जगह होने की कल्पना करें। अपने आप को नींद से लड़ते और हारने की कल्पना करें। मसीह के वहां आने पर जहां वे थे, ''उनके शरीर पेड़ों के नीचे बोरों की तरह पड़े हुए थे। ठण्डी सांस लेते हुए, यीशु जानता था कि वे तीनों सो रहे हैं।''[8]

स्वर्गदूत के दर्शन देने के बाद प्रभु के चेहरे पर आई रौनक देखें। इस पर उसका मुख

कैसे बदल गया होगा? तीसरी बार चेलों के पास जाकर यीशु ने पसीने से भीगे अपने कपड़ों को कैसे देखा? क्या वह रात की शरद हवा में कांपा? अब उसकी आवाज़ में आत्मविश्वास कैसे आ गया?

अन्त में, भीड़ के बाग में घुसने को देखें: "बाग में से हुजूम के आने का शोर सुनाई दे रहा है। लोगों के हाथों में जलती मशालें रात को भीड़ के ऊपर धुएं के लच्छे बना रही थीं।"[9] प्रभु के साहसपूर्वक उनकी ओर बढ़ने को चित्रित करें। वह आप के लिए और मेरे लिए मरने को तैयार था।

टिप्पणियां

[1]ए. एम. फेयरबेर्न, *स्टडीज़ इन द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (लंदन: हॉडर एण्ड स्टाउटन, 1889), 245. [2]एच. आई. हेस्टर द *हार्ट ऑफ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 199. [3]विलियम बार्कले, द *गॉस्पल ऑफ़ जॉन,* संशो. संस्क., अंक 2, द डेली बाइबल स्टडी सीरीज (फिलाडेल्फिया: वैस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 221. [4]जेमी बकिंघम, द *नाज़रीन* (एन्न आर्बर, मिशिगन: सर्वेंट पब्लिकेशंस, 1991), 187. [5]एस. डी. गोरडन, *क्वाइट टाक्स अबाउट जीज़स* (न्यू यॉर्क: फ्लेमिंग एच. रेवल कं., 1910), 231. [6]केन गाइर, *मोमंट्स विद द सेवियर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1998), 325. [7]वाल्टर वैंगरिन, जूनियर, द *बुक ऑफ़ गॉड: द बाइबल ऐज़ ए नॉवल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1996), 785. [8]वही, 786. [9]गाइर, 331.

यरूशलेम नगर
(यीशु के अंतिम घण्टों के सुझाए गए मार्गों के साथ)

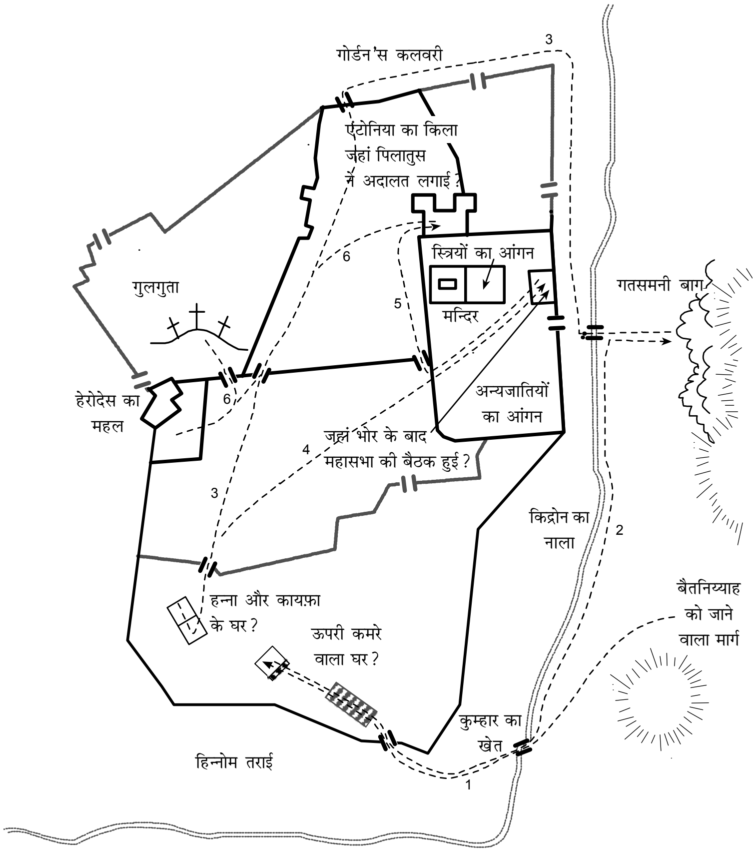

शब्दावली

	किद्रोन का नाला
	पुल / फाटक
	गतसमनी बाग के वृक्ष, जैतून पहाड़ के नीचे
	मैदान के ऊंचाई वाले क्षेत्र
	नगर में ऊंचाई वाले तल के लिए सीढ़ियां
	यीशु के समय में यरूशलेम की चारदीवारी
	आज पुराने यरूशलेम नगर की चारदीवारी

अपने मुकदमों के दौरान सुनवाई के लिए यीशु के जाने के मार्ग

(1) ऊपरी कमरे की ओर
(2) गतसमनी बाग में
(3) हन्ना और कायफ़ा के घर
(4) महासभा मे
(5) पिलातुस के पास
(6) हेरोदेस के पास, वापस पिलातुस के पास
और अन्त में गुलगुता की ओर

पुन्तियुस पिलातुस
(और यीशु की मृत्यु)

आपने कभी ग्रेटस का नाम सुना है? क्या मरसलस के नाम से आप परिचित हैं? शायद आप कहेंगे, "मुझे इन दोनों के बारे में कुछ पता नहीं!" पिलातुस का नाम? निश्चय ही, आपने उसका नाम सुना है। यह दिलचस्प है, क्योंकि ग्रेटस पिलातुस से पहले यहूदिया का रोमी हाकिम था, और मरसलस पिलातुस के बाद वहां का राज्यपाल और दोनों ही पिलातुस से अच्छे राज्यपाल थे। हमें पिलातुस ही क्यों याद है? क्योंकि एक शुक्रवार के दिन *यीशु* उसके सामने खड़ा हुआ था।

पिलातुस के बारे में हमें अधिकतर जानकारी सुसमाचार के वृत्तांतों तथा यहूदी इतिहासकार फ्लेवियुस जोसेफस के उसके राज्यपाल होने के समय के इतिहास से मिलती हैं।[1] परन्तु उसके बारे में पवित्र शास्त्र में, ऐतिहासिक तथा पुरातत्व के अन्य हवाले भी मिलते हैं। इस अतिरिक्त अध्ययन में उन स्रोतों के अलावा हमारे प्रभु की मृत्यु का वर्णन करने वाले अन्य स्रोतों से लिया गया है।

नये नियम के हवाले

यीशु के रोमी मुकदमे के सम्बन्ध में पिलातुस से जुड़े हवालों के अलावा (मत्ती 27; मरकुस 15; लूका 23; यूहन्ना 18; 19), नये नियम में इस रोमी राज्यपाल के बारे में कुछेक ही आयतें हैं। वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा अपनी सेवकाई आरम्भ करने के समय राज्यपाल था (लूका 3:1)। गलीलियों की एक खबर आई, "जिन का लोहू पिलातुस ने उन्हीं के बलिदानों के साथ मिलाया था" (लूका 3:1)। शायद विद्रोह को दबाने के लिए (इस अध्ययन में आगे इस पर चर्चा करेंगे)। प्रेरितों के प्रवचनों में, पिलातुस का उल्लेख यीशु की मृत्यु में शामिल व्यक्ति के रूप में हुआ (प्रेरितों 4:27; 13:28; देखें 3:13)। पौलुस ने "पुन्तियुस पिलातुस के सामने" की गई यीशु की बातों को "अच्छा अंगीकार" कहा (1 तीमुथियुस 6:13)।

जे. जी. वॉस ने नये नियम की बातों का यह सार दिया है: यह "पिलातुस को एक कड़े और अविश्वासी के रूप में अर्थात एक कठोर मन रोम [ी], जिसमें सम्मान के परम्परागत रोम [ी] गुणों, न्याय और ईमानदारी की कमी थी, के रूप में दिखाता है। पिलातुस न्याय को बनाए रखने वाला होने के बजाय समझौते और कार्य साधता का वितरक था।"[2]

फ़्लेवियुस जोसेफस (37 ईस्वी-93 ईस्वी के बाद)

जोसेफस ने पिलातुस के राज्यपाल होने के समय की तीन घटनाएं लिखी हैं, जिनसे यहूदियों के साथ उसके अस्थिर सम्बन्धों की जानकारी मिलती है। (1) जब पिलातुस ने यरूशलेम में सेना की एक टुकड़ी भेजी, तो सेना ने ऐसे झण्डों का इस्तेमाल किया, जिनमें सम्राट की आकृतियां दिखाई गईं थीं, जो यहूदी व्यवस्था तथा यहूदिया में पिछली रोमी

नीति के विपरीत थीं। यहूदियों के साथ झगड़े के बाद, पिलातुस ने उन आकृतियों को हटा दिया।[3] (2) पिलातुस ने यरूशलेम में पानी लाने के लिए जल सेतु बनवाकर यहूदी विरोध को शांत करने की कोशिश की। परन्तु यह पता चलने पर कि इस प्रोजेक्ट के लिए मन्दिर का धन इस्तेमाल किया गया था, हिंसक प्रदर्शन हुआ और बलवा करने वाले मारे गए।[4] (कुछ लोगों का मानना है कि लूका 13:1 वाली घटना इसी कारण हुई।) (3) कार्यालय में अपने दसवें और अन्तिम वर्ष में, पिलातुस ने सामरिया में एक सशस्त्र गुट को दबाने के लिए सेना का इस्तेमाल किया। यद्यपि ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि उस गुट ने विद्रोह करना चाहा था, इस पर हमला अवश्य कर दिया गया। बहुत से लोग उस झगड़े में मारे गए और बहुत से लड़ाई में बच गए और बागियों को मार दिया गया। सामरी अधिकारियों ने सीरिया के राज्यपाल के पास विरोध जताया, जो पिलातुस के ऊपर था। उसने पिलातुस को उसके पद से हटाकर जांच का सामना करने के लिए वापस रोम भेज दिया।[5]

हमारे इस अध्ययन के सम्बन्ध में, शायद सबसे बड़ी दिलचस्पी जोसेफस का कथित *टैस्टीमोनियम फ्लेवियनम* (यीशु के बारे में उसकी ''गवाही'') है। बहुत से लोगों का मानना है कि इस इतिहासकार के शब्दों को बाद में मसीही लोगों द्वारा मसालेदार बना दिया गया, पर अधिकतर लोग मानते हैं कि मुख्य बात इस वाक्य सहित जोसेफस द्वारा ही लिखी गई थी: ''... हम में से प्रमुख लोगों के सुझाव पर, जब पिलातुस ने उसे क्रूस का दण्ड दिया, तो उससे प्रेम रखने वालों ने पहले तो उसे नहीं छोड़ा।''[6]

फिलो (लगभग 20 ई. पू.-लगभग 50 ईस्वी)

सिकन्द्रिया के यहूदी दार्शनिक फिलो ने पिलातुस पर हर प्रकार से दुष्ट होने का आरोप लगाया। अधिकतर विद्वानों का मानना है कि यह धर्मशास्त्री बढ़ा-चढ़ाकर कहने का दोषी था, पर कई पहलुओं में राज्यपाल का उसका शब्द चित्रण बाइबल तथा ऐतिहासिक लेखों से मेल खाता है। फिलो ने पिलातुस के ''भ्रष्टाचारों, गुस्ताख़ी के उसके कामों, उसकी लूटमार [सम्पत्ति को ज़बर्दस्ती हथियाना], लोगों का अपमान करने की उसकी आदत, उसकी क्रूरता और बिना मुकदमे के लोगों की हत्या करते रहने, उन्हें दण्ड देने और उसकी खत्म न होने वाली, अनावश्यक और सबसे खतरनाक अमानवीयता'' के बारे में लिखा है।[7]

फिलो ने यहूदियों के साथ पिलातुस के अनिश्चित सम्बन्ध के बारे में एक घटना का वर्णन किया है। राज्यपाल ने ढालें रखी हुई थीं, जिन में यरूशलेम के उसके निवास की दीवारों पर सम्राट के प्रति समर्पण दिखाया गया था। क्रुद्ध यहूदी अगुओं ने तिब्रयुस के पास विरोध भेजा। तिब्रयुस ने उन शील्डों को उतारकर कैसरिया में अगस्तुस के मन्दिर में लगाने का आदेश दे दिया।[8]

विभिन्न ऐतिहासिक हवाले

बाबुल का यहूदी तालमुड यीशु को ''फसह की संध्या पर लटकाया जाना'' बताता है[9] और ज़ोर देता है कि यहूदी अगुओं ने उसे दण्ड देकर सही किया।

एक लातीनी इतिहासकार टेसिटुस, जिसने 115 ईस्वी और 117 के बीच में लिखा, ने इसे मसीही लोगों के लिए कहा है: ''उन्हें उनका नाम मसीह से मिला, जिसे तिब्रयुस के शासन में हाकिम पुन्तियुस पिलातुस द्वारा दण्ड की आज्ञा से मार डाला गया था।''[10]

मारा बार सिरापियन द्वारा अपने पुत्र को लिखे एक सीरियाई पत्र में यीशु के विषय में इन शब्दों में बताया गया है: ''यहूदियों को अपने बुद्धिमान राजा को मारकर क्या लाभ हुआ? इसके तुरन्त बाद तो उनका राज्य नष्ट हो गया।... न ही वह बुद्धिमान राजा मरा रहा; वह अपनी दी हुई शिक्षाओं में जीवित रहा।''[11] इस स्रोत की तिथि ज्ञात नहीं है, परन्तु यह 73 ईस्वी से पहले लिखा गया हो सकता है।

1961 में पिलातुस का पहला पुरातत्वीय प्रमाण मिला था। पुरातत्वविदों को कैसरिया के रोमी थियेटर में ''पुन्तियुस पिलातुस, यहूदिया का सिद्ध'' लिखा हुआ एक पत्थर मिला।[12]

परमेश्वर की प्रेरणा रहित मसीही लेखक

परमेश्वर की प्रेरणा रहित कई आरम्भिक मसीही लेखकों ने ऑरिगन सहित पिलातुस का उल्लेख किया। जस्टिन मार्टिर और टर्टुलियन ने यीशु के मुकदमे के रोमी न्यायालय के आधिकारिक रिकॉर्ड की बात की है,[13] परन्तु उन्होंने इस रिकॉर्ड को वास्तव में देखा या नहीं, यह स्पष्ट नहीं है।[14]

हम में से कइयों की, पिलातुस के अंतिम दिन में बड़ी व्यक्तिगत दिलचस्पी है। इस राज्यपाल को रोम में वापस कब बुलाया गया (जैसा कि इस अध्ययन में पहले ''फ्लेवियुस जोसेफस'' शीर्षक में लिखा है), वह टेसिटुस की मृत्यु के बाद वहां पहुंचा। उसके बाद की बातों का हमारे पास कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है पर युसबियुस ने उस प्रसिद्ध परम्परा के बारे में लिखा है कि उसने अपने मुकदमे के बाद आत्महत्या कर ली।[15] बाद की परम्पराओं में कहा गया कि उसने गाऊल के वियाना अलोब्रोगम नामक स्थान (अब फ्रांस) में गयुस के शासन में आत्महत्या की (37–41 ईस्वी), जहां उसे निर्वासित किया गया था। युसबियुस ने राज्यपाल की मृत्यु को ईश्वरीय न्याय कहा।[16]

टिप्पणियां

[1]जोसेफस *एंटिक्विटीज़ ऑफ़ द ज्यूस* 18.2.2; 18.3.1–2; *वार्स ऑफ़ द ज्यूस* 2.9.2–4. [2]जे. जी. वॉस, ''पाइलेट, पौंटियुस,'' *द ज़ौंडरवन पिक्टोरियल इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ द बाइबल,* सामान्य संस्करण. मैरिल सी.टैनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1975), 4:792. [3]*एंटिक्विटीज़ ऑफ़ द ज्यूस* 18.3.1; *वार्स ऑफ़ द ज्यूस* 2.9.2,3. [4]*वार्स ऑफ़ द ज्यूस* 2.9.4. [5]*एंटिक्विटीज़ ऑफ़ द ज्यूस* 18.4.1, 2. [6]*एंटिक्विटीज़ ऑफ़ द ज्यूस* 18.3.3. [7]फिलो *लिगेशियो एड गेलियुम* 38. [8]फिलो *डी लिगेशियन एड गेलियुस* 299–305. [9]ब्रूस कोरली, ''ट्रायल ऑफ़ जीज़स,'' *डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एण्ड द गॉस्पल्स,* सम्पादक जोयल बी. ग्रीन और स्कॉट मैक्नाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोयस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 842 में

उद्धृत *मिशनाह,* सनहेद्रिन 43ए. [10]*टेसिटुस ऐनल्स* 15.44.

[11]कोरली, 842 में उद्धृत। [12]जॉन मैक्रे, *आर्कियोलॉजी एण्ड द न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1991), 203–4. [13]जस्टिन मार्टिर *अपोलोजी* 1.35; 1.48; टर्टुलियन *अपोलोजी* 5.2; 21.24. [14]सदियों बाद, किसी अज्ञात लेखक द्वारा परमेश्वर की प्रेरणा रहित ''पिलातुस के काम'' होने का दावा करने वाला एक सजावटी दस्तावेज़ लिखा गया था। [15]यूसबियुस *ऐक्लेसियस्टिकल हिस्टरी* 2.7. [16]वही।